कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्ष : 16 अंक : 18 कानपुर, मंगलवार 16 जुलाई 2024 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य : 2.00 रुपए

राष्ट्रीय स्वरूप

ढैचा की हरी खाद से मिट्टी में सूक्ष्म जीवाणुओं की भी बढ़ती है संख्या

कानपुर । सीएसए द्वारा संचालित कृषि विज्ञान केंद्र, दिलीप नगर द्वारा ग्राम औरंगाबाद में निकरा योजना अंतर्गत ढेंचा फसल हरी खाद हेतु विषय पर एक दिवसीय प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया। मिट्टी के वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने उपस्थित कृषकों को बताया कि ढैचा की फसल को बुवाई के 40 से 45 दिनों पर खेत में पलट देना चाहिए। जिससे मिट्टी को अधिक मात्रा में जीवांश पदार्थ मिल जाता है।

डॉक्टर खान ने बताया कि ढैचा की हरी खाद से मिट्टी में सूक्ष्म जीवाणुओं की भी संख्या बढ़ती है। साथ ही आगामी फसल को सभी पोषक तत्व भी प्राप्त होते हैं। उन्होंने कहा कि ढैचा की पत्तियों का पीएच मान 4.5 होता है इसलिए ऊसर भूमियों में ढैचा कि हरी खाद करने से ऊसर भूमि सामान्य भूमि में परिवर्तित होने लगती है। जिससे मिट्टी की सेहत में सुधार होता है। उन्होंने बताया कि ढैचा की जड़ों में सूक्ष्म पीली गांठे होती हैं। जिसमें राइजोबियम जीवाणु होता है जो वायुमंडलीय नाइट्रोजन को एकत्रित कर मिट्टी में मिला देता है। उन्होंने कहा कि एक शोध के अनुसार ढैचा की हरी खाद से 22 से 30 किलोग्राम नाइट्रोजन प्रति एकड़ मिट्टी को प्राप्त होता है। इससे भूमि की संरचना भी सुधरती है तथा रासायनिक उर्वरकों पर किसानों का धन व्यय भी काम होता है।इस अवसर पर एसआरएफ शुभम यादव, प्रगतिशील कृषक श्री चरण सिंह, रामबाबू सहतावनपुरवा,सुनील कुमार,शिव शंकर एवं जयकुमार सहित अन्य कृषक उपस्थित रहे।

अंक-136 कानपुर, मंगलवार 16 जुलाई 2024 पृष्ठ-8

दैनिक

आज का कानपुर

र से प्रकाशित लखनऊ, उन्नाव, सीतापुर, लखीमपुर खीरी, हमीरपुर, मौदहा, बांदा, फतेहपुर, प्रयागराज, इटावा, कन्नौज, गाजीपुर, कानपुर देहात, सुल्तानपुर, अमेठी, बहराइच में प्रसारित

कानपुर मण्डल/आस/पास

हरी खाद से सुधरेगी मिट्टी की सेहत, निक्रा योजना अंतर्गत हुआ प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन

आज का कानपुर

कानपुर । चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर द्वारा संचालित कृषि विज्ञान केंद्र,दिलीप नगर द्वारा ग्राम औरंगाबाद में निकरा योजना अंतर्गत ढैंचा फसल हरी खाद हेतु विषय पर एक दिवसीय प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया मिट्टी के वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने उपस्थित कृषकों को बताया कि ढैचा की फसल को बुवाई के 40 से 45 दिनों पर खेत में पलट देना चाहिए जिससे मिट्टी को अधिक मात्रा में जीवांश पदार्थ मिल जाता है डॉक्टर खान ने बताया कि ढैचा की हरी खाद से मिट्टी में सूक्ष्म जीवाणुओं की भी संख्या बढ़ती है साथ ही आगामी फसल को सभी पोषक तत्व भी प्राप्त होते हैं उन्होंने कहा कि ढैचा की पत्तियों का पीएच मान 4.5 होता है इसलिए ऊसर भूमियों में ढैचा कि हरी खाद करने से ऊसर भूमि सामान्य भूमि में परिवर्तित होने लगती है जिससे मिट्टी की सेहत में सुधार होता है उन्होंने बताया कि ढैचा की जड़ों में सूक्ष्म पीली गांठे होती हैं जिसमें राइजोबियम जीवाणु होता है जो वायुमंडलीय नाइट्रोजन को एकत्रित कर मिट्टी में मिला देता है उन्होंने कहा कि एक शोध के अनुसार ढैचा की हरी खाद से 22 से 30 किलोग्राम नाइट्रोजन प्रति एकड़ मिट्टी को प्राप्त होता है इससे भूमि की संरचना भी सुधरती है तथा रासायनिक उर्वरकों पर किसानों का धन व्यय भी काम होता है इस अवसर पर एसआरएफ शुभम यादव, प्रगतिशील कृषक चरण सिंह, रामबाबू सहतावन पुरवा, सुनील कुमार, शिव शंकर एवं जयकुमार सहित अन्य कृषक उपस्थित रहे।

हरी खाद से सुधरेगी मिट्टी की सेहत किसानों को दी गई जानकारियां

कृषि विज्ञान केंद्र के ग्राम औरंगाबाद के निकरा योजना अंतर्गत हुआ प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन

कानपुर, 15 जुलाई। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय की ओर से संचालित कृषि विज्ञान केंद्र,दिलीप नगर के ग्राम औरंगाबाद में निकरा योजना अंतर्गत ढेंचा फसल हरी खाद के लिए विषय पर एक दिवसीय प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया। मिट्टी के वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने कृषकों को बताया कि ढैचा की फसल को बुवाई के 40 से 45 दिनों पर खेत में पलट देना चाहिए। जिससे मिट्टी को अधिक मात्रा में जीवांश पदार्थ मिल जाता है। डॉ. खान ने बताया कि ढैचा की हरी खाद से मिट्टी में सूक्ष्म जीवाणुओं की भी संख्या बढ़ती है। साथ ही आगामी फसल को सभी पोषक तत्व भी प्राप्त होते हैं। उन्होंने कहा कि ढैचा की पत्तियों का पीएच मान 4.5 होता है इसलिए ऊसर भूमियों में ढैचा कि हरी खाद करने से ऊसर भूमि सामान्य भूमि में परिवर्तित होने लगती है। जिससे मिट्टी की सेहत में सुधार होता है। उन्होंने बताया कि ढैचा की जड़ों में सूक्ष्म पीली गांठे होती हैं। जिसमें राइजोबियम जीवाणु होता है जो वायुमंडलीय नाइट्रोजन को एकत्रित कर मिट्टी में मिला देता है। उन्होंने कहा कि एक शोध के अनुसार ढैचा की हरी खाद से 22 से 30 किलोग्राम नाइट्रोजन प्रति एकड़ मिट्टी को प्राप्त होता है। इससे भूमि की संरचना भी सुधरती है तथा रासायनिक उर्वरकों पर किसानों का धन व्यय भी काम होता है। इस अवसर पर एसआरएफ शुभम यादव, प्रगतिशील कृषक श्री चरण सिंह, रामबाबू सहतावनपुरवा,सुनील कुमार,शिव शंकर एवं जयकुमार सहित अन्य कृषक उपस्थित रहे।

खेतो में हरी खाद के बारे में किसानों को बताते वैज्ञानिक।

हरी खाद से सुधरेगी मिट्टी की सेहत

निक्रा योजना अंतर्गत हुआ प्रक्षेत्र दिवस का हुआ आयोजन

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय द्वारा संचालित कृषि विज्ञान केंद्र,दिलीप नगर द्वारा ग्राम औरंगाबाद में निकरा योजना अंतर्गत ढैंचा फसल हरी खाद हेतु विषय पर एक दिवसीय प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया। मिट्टी के वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने उपस्थित कृषकों को बताया कि ढैचा की फसल को बुवाई के 40 से 45 दिनों पर खेत में पलट देना चाहिए। जिससे मिट्टी को अधिक मात्रा में जीवांश पदार्थ मिल जाता है। डॉक्टर खान ने बताया कि ढैचा की हरी खाद से मिट्टी में सूक्ष्म जीवाणुओं की भी संख्या बढ़ती है।

साथ ही आगामी फसल को सभी पोषक तत्व भी प्राप्त होते हैं। उन्होंने कहा कि ढैचा की पत्तियों का पीएच मान 4.5 होता है इसलिए ऊसर भूमियों में ढैचा कि हरी खाद करने से ऊसर भूमि सामान्य भूमि में परिवर्तित होने लगती है। जिससे मिट्टी की सेहत में सुधार होता है। उन्होंने बताया कि ढैचा की जड़ों में सूक्ष्म पीली गांठे होती हैं। जिसमें राइजोबियम जीवाणु होता है जो वायुमंडलीय नाइट्रोजन को एकत्रित कर मिट्टी में मिला देता है। उन्होंने कहा कि एक शोध के अनुसार ढैचा की हरी खाद से 22 से 30 किलोग्राम नाइट्रोजन प्रति एकड़ मिट्टी को प्राप्त होता है। इससे भूमि की संरचना भी सुधरती है तथा रासायनिक उर्वरकों पर किसानों का धन व्यय भी काम होता है।इस अवसर पर एसआरएफ शुभम यादव, प्रगतिशील कृषक श्री चरण सिंह, रामबाबू सहतावनपुरवा,सुनील कुमार,शिव शंकर एवं जयकुमार सहित अन्य कृषक उपस्थित रहे।

email: shahardayaranews@gmail.com

दैनिक

शहर दायरा न्यूज

हिन्दी/अंग्रेजी द्विभाषीय

https://www.facebook.com/shahardayaranews/

वर्ष 9 अंक: 324 | कानपुर, मंगलवार 16 जुलाई 2024 | पृष्ठ: 8 | मूल्य-2.00 ₹

हरी खाद से सुधरेगी मिट्टी की सेहत, निक्रा योजना अंतर्गत हुआ प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन

शहर दायरा न्यूज

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर द्वारा संचालित कृषि विज्ञान केंद्र,दिलीप नगर द्वारा ग्राम औरंगाबाद में निकरा योजना अंतर्गत ढेंचा फसल हरी खाद हेतु विषय पर एक दिवसीय प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया मिट्टी के वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने उपस्थित कृषकों को बताया कि ढैचा की फसल को बुवाई के 40 से 45 दिनों पर खेत में पलट देना चाहिए जिससे मिट्टी को अधिक मात्रा में जीवांश पदार्थ मिल जाता है डॉक्टर खान ने बताया कि ढैचा की हरी खाद से मिट्टी में सूक्ष्म जीवाणुओं की भी संख्या बढ़ती है साथ ही आगामी फसल को सभी पोषक तत्व भी प्राप्त होते हैं उन्होंने कहा कि ढैचा की पत्तियों का पीएच मान 4.5 होता है इसलिए ऊसर भूमियों में ढैचा कि हरी खाद करने से ऊसर भूमि सामान्य भूमि में परिवर्तित होने लगती है जिससे मिट्टी की सेहत में सुधार होता है उन्होंने बताया कि ढैचा की जड़ों में सूक्ष्म पीली गांठे होती हैं जिसमें राइजोबियम जीवाणु होता है जो वायुमंडलीय नाइट्रोजन को एकत्रित कर मिट्टी में मिला देता है उन्होंने कहा कि एक शोध के अनुसार ढैचा की हरी खाद से 22 से 30 किलोग्राम नाइट्रोजन प्रति एकड़ मिट्टी को प्राप्त होता है इससे भूमि की संरचना भी सुधरती है तथा रासायनिक उर्वरकों पर किसानों का धन व्यय भी काम होता है इस अवसर पर एसआरएफ शुभम यादव, प्रगतिशील कृषक चरण सिंह, रामबाबू सहतावन पुरवा, सुनील कुमार, शिव शंकर एवं जयकुमार सहित अन्य कृषक उपस्थित रहे।

वर्ष : 16 अंक : 193 लखनऊ मंगलवार, 16 जुलाई 2024 पृष्ठ : 12, मूल्य: ₹4/-

विश्ववार्ता

www.vishwavarta.com

सच्ची ख़बर, पैनी नज़र

कुंभ में लिये संकल्प को महाकुंभ ... 2 | जम्मू-कश्मीर में संकेत, संदेश और... 6 | विद्युत उपभोक्ता का उत्पी

हरी खाद से सुधरेगी मिट्टी की सेहत

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के द्वारा संचालित कृषि विज्ञान केंद्र,दिलीप नगर द्वारा ग्राम औरंगाबाद में निकरा योजना अंतर्गत ढेंचा फसल हरी खाद हेतु विषय पर एक दिवसीय प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया। मिट्टी के वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने उपस्थित कृषकों को बताया कि ढैचा की फसल को बुवाई के 40 से 45 दिनों पर खेत में पलट देना चाहिए। जिससे मिट्टी को अधिक मात्रा में जीवांश पदार्थ मिल जाता है। डॉक्टर खान ने बताया कि ढैचा की हरी खाद से मिट्टी में सूक्ष्म जीवाणुओं की भी संख्या बढ़ती है। साथ ही आगामी फसल को सभी पोषक तत्व भी प्राप्त होते हैं। उन्होंने कहा कि ढैचा की पत्तियों का पीएच मान 4 .5 होता है इसलिए ऊसर भूमियों में ढैचा कि हरी खाद करने से ऊसर भूमि सामान्य भूमि में परिवर्तित होने लगती है। जिससे मिट्टी की सेहत में सुधार होता है। उन्होंने बताया कि ढैचा की जड़ों में सूक्ष्म पीली गांठे होती हैं। उन्होंने कहा कि एक शोध के अनुसार ढैचा की हरी खाद से 22 से 30 किलोग्राम नाइट्रोजन प्रति एकड़ मिट्टी को प्राप्त होता है। इससे भूमि की संरचना भी सुधरती है तथा रासायनिक उर्वरकों पर किसानों का धन व्यय भी काम होता है ।इस अवसर पर एसआरएफ शुभम यादव, प्रगतिशील कृषक चरण सिंह, रामबाबू सहतावनपुरवा,सुनील कुमार,शिव शंकर एवं जयकुमार सहित अन्य कृषक उपस्थित रहे।

ढेंचा फसल हरी खाद विषय पर एक दिवसीय प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया

जन एक्सप्रेस । कानपुर नगर

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय द्वारा संचालित कृषि विज्ञान केंद्र,दिलीप नगर द्वारा सोमवार को ग्राम औरंगाबाद में निकरा योजना के अंतर्गत ढेंचा फसल हरी खाद विषय पर एक दिवसीय प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने वहां उपस्थित किसानों को बताया कि ढैचा की फसल को बुवाई के 40 से 45 दिनों पर खेत में पलट देना चाहिए। जिससे मिट्टी को अधिक मात्रा में जीवांश पदार्थ मिल जाता है। डॉ. खान ने बताया कि ढैचा की हरी खाद से मिट्टी में सूक्ष्म जीवाणुओं की भी संख्या बढ़ती है व आगामी फसल को सभी पोषक तत्व भी प्राप्त होते हैं। उन्होंने कहा कि ढैचा की पत्तियों का पीएच मान 4.5 होता है इसलिए ऊसर भूमियों में ढैचा की हरी खाद करने से ऊसर भूमि सामान्य भूमि में परिवर्तित होने लगती है। जिससे मिट्टी की सेहत में सुधार होता है। उन्होंने बताया कि ढैचा की जड़ों में सूक्ष्म पीली गांठे होती हैं। जिसमें राइजोबियम जीवाणु होता है जो वायुमंडलीय नाइट्रोजन को एकत्रित कर मिट्टी में मिला देता है। उन्होंने कहा कि एक शोध के अनुसार ढैचा की हरी खाद से 22 से 30 किलोग्राम नाइट्रोजन प्रति एकड़ मिट्टी को प्राप्त होता है। इससे भूमि की संरचना भी सुधरती है तथा रासायनिक उर्वरकों पर किसानों का धन व्यय भी कम होता है।इस अवसर पर एसआरएफ शुभम यादव, प्रगतिशील किसान चरण सिंह, रामबाबू सहतावनपुरवा, सुनील कुमार,शिव शंकर एवं जयकुमार सहित अन्य किसान मौजूद रहे।

उपदेश टाइम्स

कानपुर से प्रकाशित एवं कानपुर, उन्नाव, लखनऊ, गोण्डा, जौनपुर, फिरोजाबाद, जालौन उरई, कन्नौज, फर्रुखाबाद, एटा में प्रसारित

मूल्य रू0 2.00 | कानपुर, मंगलवार 16 जुलाई, 2024 | (Email: updeshtim

निक्रा योजना अंतर्गत हुआ प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन

कानपुर नगर उपदेश टाइम्स चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर द्वारा संचालित कृषि विज्ञान केंद्र, दिलीप नगर द्वारा ग्राम औरंगाबाद में निकरा योजना अंतर्गत ढेंचा फसल हरी खाद हेतु विषय पर एक दिवसीय प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया मिट्टी के वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने उपस्थित कृषकों को बताया कि ढैचा की फसल को बुवाई के 40 से 45 दिनों पर खेत में पलट देना चाहिए जिससे मिट्टी को अधिक मात्रा में जीवांश पदार्थ मिल जाता है डॉक्टर खान ने बताया कि ढैचा की हरी खाद से मिट्टी में सूक्ष्म जीवाणुओं की भी संख्या बढ़ती है साथ ही आगामी फसल को सभी पोषक तत्व भी प्राप्त होते हैं उन्होंने कहा कि ढैचा की पत्तियों का पीएच मान 4.5 होता है इसलिए ऊसर भूमियों में ढैचा कि हरी खाद करने से ऊसर भूमि सामान्य भूमि में परिवर्तित होने लगती है जिससे मिट्टी की सेहत में सुधार होता है उन्होंने बताया कि ढैचा की जड़ों में सूक्ष्म पीली गांठे होती हैं जिसमें राइजोबियम जीवाणु होता है जो वायुमंडलीय नाइट्रोजन को एकत्रित कर मिट्टी में मिला देता है उन्होंने कहा कि एक शोध के अनुसार ढैचा की हरी खाद से 22 से 30 किलोग्राम नाइट्रोजन प्रति एकड़ मिट्टी को प्राप्त होता है इससे भूमि की संरचना भी सुधरती है तथा रासायनिक उर्वरकों पर किसानों का धन व्यय भी काम होता है इस अवसर पर एसआरएफ शुभम यादव, प्रगतिशील कृषक चरण सिंह, रामबाबू सहतावन पुरवा, सुनील कुमार, शिव शंकर एवं जयकुमार सहित अन्य कृषक उपस्थित रहे।